**International Journal of Research in Hindi**
**www.hindijournal.in**
**ISSN: 2582-3493**
**Received: 21-12-2022, Accepted: 07-01-2023, Published: 23-01-2023**
**Volume 5, Issue 1, 2023, Page No. 4-6**

# पद्मावत का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

**डॉ तबस्सुम खान, आशा चन्दन बारेकर**
श्री सत्य साईं विश्व विद्यालय, सीहोर, मध्य प्रदेश, भारत

**सारांश**
बीसवी शताब्दी में हमारा हिन्दी साहित्य विविध क्षेत्रों में अनेक नई दिशाओं की ओर अग्रसर हुआ है। उसमें नई–नई साहित्यिक विधाओं, नये–नये शिल्पों, प्रतिको विचार पद्वति का समावेश हुआ है, इसलिए समीक्षा के क्षेत्र में भी नवीन दृष्टिकोणों एवं प्रणालियों का विकसित होना स्वाभाविक ही है। कहने का अभिप्राय है कि मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन भी इसी विकास का परिणाम है।
मानसिक प्रवृत्तियों एवं भावानुभूतियों की सहज कलात्मक अभिव्यक्ति को ''साहित्य'' कहा जाता है तो उनका वैज्ञानिक अनुशीलन मनोविज्ञान की संज्ञा से विभूषित हाता है। इस दृष्टि से साहित्य और मनोविज्ञान की आधारभूत सामग्री एक ही है। अन्तर केवल उनके लक्ष्य एवं प्रयोग पद्वति का है। एक का लक्ष्य उन्हें रंग–बिरंगे रूपों में प्रस्तुत करते हुए सौन्दर्य सृष्टि करना है तो दूसरे में उनका विवेचन विश्लेषण करते हुए सत्यानुसंधान करना होता है। इस अन्तर के होते हुए भी वस्तुगत साम्य के कारण वे एक–दूसरे के पूरक एवं साधक सिद्व होते है। इतना ही नहीं जब हम साहित्यानुशीलन में भी सौन्दर्यानुभूति के स्थान पर तत्वानुसंधान के लक्ष्य से प्रवृत्त होते है तो वहां मनोविज्ञान का आश्रम ग्रहण करना आवश्यक हो जाता है।
यही कारण है कि साहित्य–समीक्षा के क्षेत्र में चाहे वह भावानुभूतियों को आधार मानकर चलने वाली रस सिद्वांत हो या कल्पना–शक्ति पर बल देने वाला विम्ब सिद्वांत हो अथवा फ्रॉयड जुंग का आधुनिक स्वप्न प्रतीक सिद्धांत हो मनोविज्ञान का आश्रय प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में प्रायः ग्रहण किया जाता है। साहित्यानुसंधान एवं साहित्य विज्ञान के क्षेत्र में निश्चित् ही मनोविज्ञान सम्मत सिद्वांतों को ही साहित्य–वस्तु के परीक्षण का आधार बनाया जाता हैं।
साहित्य में साहित्यकार के व्यक्तित्व की छाप होती है। यह कथन तो सर्वथा निर्विवाद है। अतः किसी भी कवि के व्यक्तित्व का विश्लेषण बाध्य साक्ष्यों के आधार पर ही नहीं अपितु अन्तः साक्ष्यों के आधार पर भी किया जा सकता है। इन अन्तः साक्ष्यों में कवि का व्यक्तित्व स्वतः ही काव्य में प्रतिविम्बित होता है। जायसीकृत पद्मावत ''जायसी का प्रेमाख्यान काव्य है। जायसी ने बहुत ही मार्मिक एवं भावपूर्ण परिस्थिति का उल्लेख कर एक पक्षी की नागमती के प्रति संवेदनशीलता दर्शायी है। जिस कवि के पक्षी ही इतने संवेदनशील हो, वह कवि स्व्यं कितना संवेदनशील होगा यह कहने की आवश्यकता नहीं।
जिस प्रकार जायसी के भावुक हृदय ने मानव के सूक्ष्मतम नूतन भावनाओं को खोज कर उनकी अभिव्यक्ति की थी, उसी प्रकार उन्होंने मानव मनोविज्ञान के सूक्ष्मातिसूक्ष्म रहस्यों का उद्घाटन किया था। प्रणय मनोविज्ञान में जायसी जी अप्रतिम पारखी थे। जब प्रेमी घोर साधना के बाद प्रेमिका को प्राप्त करने में समर्थ होता है

**मूल शब्दः** पद्मावत, मनोविज्ञान, सत्यानुसंधान

बीसवी शताब्दी में हमारा हिन्दी साहित्य विविध क्षेत्रों में अनेक नई दिशाओं की ओर अग्रसर हुआ है। उसमें नई–नई साहित्यिक विधाओं, नये–नये शिल्पों, प्रतिको विचार पद्वति का समावेश हुआ है, इसलिए समीक्षा के क्षेत्र में भी नवीन दृष्टिकोणों एवं प्रणालियों का विकसित होना स्वाभाविक ही है। कहने का अभिप्राय है कि मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन भी इसी विकास का परिणाम है।

मानसिक प्रवृत्तियों एवं भावानुभूतियों की सहज कलात्मक अभिव्यक्ति को ''साहित्य'' कहा जाता है तो उनका वैज्ञानिक अनुशीलन मनोविज्ञान की संज्ञा से विभूषित हाता है। इस दृष्टि से साहित्य और मनोविज्ञान की आधारभूत सामग्री एक ही है। अन्तर केवल उनके लक्ष्य एवं प्रयोग पद्वति का है। एक का लक्ष्य उन्हें रंग–बिरंगे रूपों में प्रस्तुत करते हुए सौन्दर्य सृष्टि करना है तो दूसरे में उनका विवेचन विश्लेषण करते हुए सत्यानुसंधान करना होता है। इस अन्तर के होते हुए भी वस्तुगत साम्य के कारण वे एक–दूसरे के पूरक एवं साधक सिद्व होते है। इतना ही नहीं जब हम साहित्यानुशीलन में भी सौन्दर्यानुभूति के स्थान पर तत्वानुसंधान के लक्ष्य से प्रवृत्त होते है तो वहां मनोविज्ञान का आश्रम ग्रहण करना आवश्यक हो जाता है।

यही कारण है कि साहित्य–समीक्षा के क्षेत्र में चाहे वह भावानुभूतियों को आधार मानकर चलने वाली रस सिद्वांत हो या कल्पना–शक्ति पर बल देने वाला विम्ब सिद्वांत हो अथवा फ्रॉयड जुंग का आधुनिक स्वप्न प्रतीक सिद्धांत हो मनोविज्ञान का आश्रय प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में प्रायः ग्रहण किया जाता है। साहित्यानुसंधान एवं साहित्य विज्ञान के क्षेत्र में निश्चित् ही मनोविज्ञान सम्मत सिद्वांतों को ही साहित्य–वस्तु के परीक्षण का आधार बनाया जाता हैं।

साहित्य में साहित्यकार के व्यक्तित्व की छाप होती है। यह कथन तो सर्वथा निर्विवाद है। अतः किसी भी कवि के व्यक्तित्व का विश्लेषण बाध्य साक्ष्यों के आधार पर ही नहीं अपितु अन्तः साक्ष्यों के आधार पर भी किया जा सकता है। इन अन्तः साक्ष्यों में कवि का व्यक्तित्व स्वतः ही काव्य में प्रतिविम्बित होता है। जायसीकृत पद्मावत ''जायसी का प्रेमाख्यान काव्य है। जायसी ने बहुत ही मार्मिक एवं भावपूर्ण परिस्थिति का उल्लेख कर एक पक्षी की नागमती के प्रति संवेदनशीलता दर्शायी है। जिस कवि के पक्षी ही इतने संवेदनशील हो, वह कवि स्व्यं कितना संवेदनशील होगा यह कहने की आवश्यकता नहीं।

जिस प्रकार जायसी के भावुक हृदय ने मानव के सूक्ष्मतम नूतन भावनाओं को खोज कर उनकी अभिव्यक्ति की थी, उसी प्रकार उन्होंने मानव मनोविज्ञान के सूक्ष्मातिसूक्ष्म रहस्यों का उद्घाटन किया था। प्रणय मनोविज्ञान में जायसी जी अप्रतिम पारखी थे। जब प्रेमी घोर साधना के बाद प्रेमिका को प्राप्त करने में समर्थ होता है, तब वह चाहता है कि प्रेमिका उसके कष्टों की कल्पना कर, मान आदि का परित्याग कर उसे जी भर भोग प्रदान कर राजा रतनसेन एक जगह कहते हैंः–

"अनु तुम्ह कारन प्रेम पियारी। राज छाँड़ि कै भएऊँ भिखारी।।
नेट तुम्हार जो हिए समाना। चितडर मौह न सुमिरेऊँ आना।।"

पदवावती पदमावत नामक महाकाव्य के सम्पूर्ण आख्यान की केन्द्र बिन्दु है, जिसके चारों ओर महाकाव्य की घटना घूमती है। सर्वप्रथम हम उसे सिंहल की राजकुमारी के रूप में देखते है और आगे चलकर चित्तौड़ की रानी के रूप में आश्चर्य की बात है कि उसमें कोई राजसी बात नहीं मिलती। उसमें एक सामान्य नारी के स्वभाव एवं गुणों का समावेश हुआ है। वैसे तो जायसी ने उसके रूप का प्रभाव प्रकृति के कण–कण में विश्व के चेतन और अचेतन सभी पदार्थों में व्याप्त दिखलाया है। यहाँ तक कि सिंहल के मंदिर में बसंत पंचमी के दिन उसको देखते ही मंदिर का देवता वहाँ से चल बसा।

पद्मावती गै देव दुआउ। भीतर मंडप कीन्ह पैसारू।।
देवहि संसौ भा जिय केरा। भागौ केहि दिसि मंड हाय।।
इस प्रकार पदमावत जायसी की अमूल्य मनोवैज्ञानिक रचना है।

**जायसी मनोवैज्ञानिक के रूप में**

जिस प्रकार जायसी के भावुक ह्रदय ने मानव के सूक्ष्मतम नूतन भावनाओं की खोज कर उनकी अभिव्यक्ति की थी, उसी प्रकार उन्होंने मानव मनोविज्ञान के सूक्ष्मातिसूक्ष्म रहस्यों का उद्घाटन किया था। प्रणय मनोविज्ञान के तो वे अप्रतिम पारखी थे। जब प्रेमी घोर साधना के बाद प्रेमिका को प्राप्त करने में समर्थ होता है, तब वह चाहता है कि प्रेमिका उसके कष्टों की कल्पना कर, मान आदि का परित्याग कर उसे जी भर कर भोग प्रदान करे। रत्नसेन कहता है–

अनु तुम्ह कारन प्रेम पियारी। राज छाँड़ि कें भएउँ भिखारी।।
नेह तुम्हारा जो हिए समाना। चितउर माँह न सुमिरेउँ आना।।
जस मालति कह भँवर बियोगी। चढा बियोग चलेउँ होइ जोगी।।
भएउँ भिखारी नारि तुम्ह लागी। दीप पतंग होइ अँगए उँ आगी।।
भँवर खोजि जस पावै केवा। तुम्ह काँटे मैं जिव पर छेवा।।

भँवर जो पावै कँवल कहँ बहु आरति बहु आस।
भँवर होइ नेवछावरि कँवल देइ हँसि बास।।

यह मनोवृत्ति पुरूष में ही नहीं, स्त्री में भी होती है किन्तु उसकी अभिव्यक्ति थीड़े संकोच के साथ होती है इसीलिए कवि ने इस मनोवृत्ति का प्रकाशन पहले नायक से कराया और बाद में नायिका की मनोदशा का चित्र खींचा है। नायिका स्वयं कहती है–

कवनि मोहिनी वहुँ हुति तोही जोतोहि, बिथा सो उपनी मोही।
बिना जल मीन तपी तस जीऊ। चत्रिक भइउ कहल पिउ पिउ।
जारिउँ बिरह जस दीपक बाती पँथ जोवत भइउँ सीप सेवाती।।

जायसी प्रणय मनोविज्ञान के ही नहीं स्त्री मनोविज्ञान के भी बड़े पारखी थे। सौत्य डाहू का तो उन्होंने बड़ा ही मनोवैज्ञानिक चित्र अंकित किया है। इसी प्रकार पद्मावत में अनेक स्थल ऐसे हैं, जो जायसी की मनोविज्ञान विषयक गम्भीर पहुँच के घोतक है।
जायसी सरल ह्रदय ग्रामीण थे। गाँवों के दृश्य वातावरण और उपकरण उनके काव्य में बहुत आये हैं।
ओलाती धार, सरोवर, रस्सी , कुएँ,मेड, रहट की धरिया आदि के रूपक इतने समग्र ओर स्वाभाविक रूप में आए हैं कि ऐसा प्रतीत होता है कि यह उनके जीवन में बड़ी निकटता से देखे गए हैं। वे ग्रामीण जीवन से बहुत अधिक प्रभावित थे। ग्रामीण जीवन के लिए उनके ह्रदय में प्रेम था। जायसी राजसी जीवन से अनभिज्ञ थे। यही कारण है कि उनके काव्य में राजसी जीवन का मार्मिक चित्र नही है।

**पद्मावती**

पद्मावती पद्मावत नामक महाकाव्य के सम्पूर्ण आख्यान की केन्द्र बिन्दु है, जिसके चारों ओर महाकाव्य की घटना चक्कर काटती है। सर्वप्रथम हम उसे सिंहल की राजकुमारी के रूप में देखते हैं, और आगे चलकर चित्तौंड़ की रानी के रूप में। आश्चर्य की बात है कि उसमें कोई भी राजसी बात नहीं मिलती। उसमें एक सामान्य नारी के स्वभाव गुणों का समावेश हुआ है। वैसे तो जायसी ने उसके रूप का प्रभाव प्रकृति के कण–कण में, विश्व के चेतन और अचेतन सभी पदार्थों में व्याप्त दिखलाया ह। यहाँ तक कि सिंहल के मन्दिर में बसन्त पंचमी के दिन उसको देखते ही मन्दिर का देवता वहाँ से चल बसा–

पदुमावति गै देव दुआरू। भीतर मँडप कीन्ह पैसारू।।
देवहिं संसौ भा जिय केरा। भागौं केहि दिसि मँडप घेरा।।

किन्तु फिर भी उसका व्यवहार कहीं अलौकिक या असाधारण प्रतीत नहीं होता। इतना ही नहीं वह एक नितान्त राजकुमारी का सा भी नही है साधारण नारी का सा है। उसमें सामान्य नारी के अन्तर्गत की दृत्तियों एवं प्रवृत्तियों का समावेश हुआ है, जो कि मानव मनोविज्ञान के अनुकूल है। इस प्रकार पद्मावती के चरित्र का अध्ययन लोक मनोविज्ञान के रूप में किया जा सकता है, इसमें कोई सन्देह नही भले ही यह तथ्य उन्हें विचित्र सा लगे जो पद्मावत के विषय में यह दृढ़ धारणा बनाए हुए है कि पद्मावत के पात्र तो लोक पक्ष से अधिक आध्यात्मिक पक्ष के प्रतीक हैं। अब यहाँ पर पद्मावती के चरित्र के विभिन्न पक्षों पर मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया जाता है–

**पद्मावती में व्याप्त 'काम' भावना और उसका क्रमिक विकास**

पद्मावती का व्यक्तित्व काम की विभिन्न अवस्थाओं से क्रमिक रूप से गुजरता हुआ विकसित होता है। फ्रॉयड काम को व्यापक अर्थ में लेते है। वे इसे प्रेम का पर्यायवाची मानते हैं। उनका मत हैं कि इसके अन्तर्गत माता पिता का प्रेम कामुक व्यक्तियों का प्रेम, पशुओं का प्रेम और जड़ वस्तुओं का प्रेम सम्मिलित है। इसमें अँगूठा चूसने से लेकर मलमूत्रोत्सर्ग तक के समस्त सुख आ जाते हैं।

**काम की विभिन्न अवस्थायें–**

1. सर्वप्रथम बच्चें में अपने शरीर से प्रेम होता है और वह अन्य किसी से प्रेम नही करता। उसकी यह दशा आत्मरति कहलाती है।
2. **समलिंग कामुक स्थिति (भ्वउव.ैमगनंसैजंहम)** – इस स्थिति में बच्चा अपने जैसे बच्चों से प्रेम करता है, अर्थात् एक लडका लड़के से प्रेम करता है, और एक लड़की लड़की से प्रेम करती है। इसलिए इसे समलिंग कामुक स्थिति कहते हैं।
3. **विषमलिंग कामुक स्थिति –(भ्मजतवैमगनंसैजंहम)–** किन्तु जैसे ही बच्चा बड़ा होता है उसमें फिर समलिंग कामुकता नही रहती। फिर एक लड़का लड़की से प्रेम करने लगता है और एक लड़की लड़के से। इसे 'विषमलिंग कामुक स्थिति' कहते हैं।

इस प्रकार फॉयड ने लिविडो (स्पइपकव) का व्यापक अर्थ लेकर प्रेम की प्रत्येक स्थिति को उसमें समाहित किया है। जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव इस लबिडो द्वारा संचालित है। फ्रॉयड द्वारा वर्णित ''का'' का यह रूप पद्मावती के चरित्र में क्रमिक रूप

से दृष्टिगोचर होता है। आरम्भ में उसमें ''समलिंग कामुक स्थिति'' के दर्शन होते है अर्थात् वह अपने जैसी अन्य सखियों से प्रेम करता है। इतना ही नहीं वह उनके संग ही खेलती है, विहार करती है तथा उन्हीं के संग अनेक स्वछन्द क्रीडायें करती है। देखिए–

बादि मेलि के खेल पसारा। हाथ देइ जौं खेलत हारा।।
संवरहि सॉवरि गोरिहि गोरी। आपनि आपनि लीन्हि सो जोरी।।
बूझि खेल खेलहू एक साथ। हारू न होंड पराएं हाथ।।
आजुहि खेल बहुरि किस होई। खेल गए कल खेलैं कोई।।
धनि सो खेल बहुरि किस होई। खेल गएं कल खेलें कोई।।

किन्तु जैसे–जैसे पद्मावती अपनी बाल्यावस्था को छोड़कर नरवयौवन में पदार्पण करती है उसमें हमें ''विषमलिंग कामुक स्थिति'' दृष्टिगोचर होती है। अब उसका अपनी सखियों के प्रति उतना प्रेम और आकर्षण नहीं रहता। उसकी इच्छा कोई वर प्राप्त कर लेने की है। वह यौवन ज्वार, वासना और कामुकता से पीड़ित है। वह तोते से अपनी इस पीड़ा का वर्णन करते हुए कहती है।[1]

सुनु हीरामनि कहीं बुझाई। दिन–दिन मदन सतावै आई।।
पित हमार न चालै वाता। त्रासहि बोलि सकै नहिं माता।।
देस–देस के वर मोहि आवहिं। पिता हमार न आंख लगावहि।।
जीवन मोर भयउ जसगंगा। देह–देह हम्ह लाग अनंगा।।

अर्थात् मेरा यौवन गंगा की तरह उमड़ पड़ा है, जिसकी तरंगे मेरे शरीर के अंग–अंग पर लग रही है। मेरे लिए देश देशों से वर आते हैं किन्तु मेरे पिता उन पर दृष्टि तक नहीं डालते यहां पर हम पद्मावती के प्रेम को यथार्थ धरातल पर देखते है। वह काम वासना से पीड़ित है। उसकी समस्या तो वर प्राप्त कर लेने की है। इतना ही नहीं अपनी इसी इच्छा की पूर्ति की आशा से यह श्रीपंचमी को देव महादेव की पूजा करके सहज भाव से अपने मन की उस समय की भावना कहने में किंचित मात्र भी नहीं सकुचाती। वह कहती है–

औरू सहेली सवै बियाही। मो कहं देव कतहु वर नाहीं।।
हौं निरगुनि जेई कीन्हि न सेवा। गुगि निरगुनि दता तुम्ह देवा।।
वर संजोग मोहि मेखहू कलस जाति हौं मानि।
जेहि दिन इंछा पूजै बेगि चढ़ावौं आनि।।

यहाँ पर पद्मावती की काम उत्तेजक स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है। उसमें काम का उन्मुक्त प्रवाह है। रत्नसेन के प्रति उसके मन में जो प्रेम भावना है वह फ्रॉयड द्वारा प्रतिपादित विषमलिंग कामुक स्थिति की द्योतक है।
मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि यौवन के आगमन के साथ व्यक्ति में प्रणय भाव अंकुरित होता है और क्रमिक विकास के साथ दाम्पत्य प्रेम एवं सन्तान प्रेम में उसकी परिणति होती है। पद्मावती में यह अवस्थाएँ भी क्रमिक रूप में दृष्टिगोचर होती है।

**प्रणय भाव**

विवाह के पश्चात् उसमें प्रणाय भाव अंकुरित होता है। 'रत्नसेन पद्मावती भेंट' खण्ड में वह अपने आप को सोलह श्रृंगारों से सुसज्जित करती है। जैसा कि मैकडूगल ने स्वीकार किया है कि स्त्रियों की वेष–भूषा रूढियों को अतिक्रमित न करते हुए भी अनेक प्रकार के रहस्यात्मक ढंगों से दूसरों को आकृष्ट करती है और उसके अप्रधान यौन अंगों को उभार देती है। अतः पद्मावती का श्रृंगार यौन सम्बन्धित है और यौन मनोविज्ञान के अनुकूल भी।

**दाम्पत्य प्रेम**

पद्मावती में जो प्रथम भाव अंकुरित होता है उसकी परिणति दाम्पत्य चेष्टाओं में होती है। जैसे स्पर्श, चुम्बन, आंलिगन, शंतरज चौपड़, के मनोरंजन, सुरत एवं सुरतांत यह सब यौन अनुभूति की अभिव्यक्तियाँ हैं।

**उदातीकरण**

उदात्तीकरण या उर्ध्वगमन की गति प्रतिगमन के प्रति साल प्रवाहित होती है। शोधन, उर्ध्वगमन या उदात्तीकरण द्वारा मनुष्य औउ उसकी सभ्यता और संस्कृति पल्लवित होती है तथा पूर्ण रूप से विकसित होती है।
पद्मावती के प्रेम में भी उदात्तीकरण की स्थिति आती है। अभी तक तो हम देखते है कि उसके प्रेम में कामवासना का उन्मुक्त प्रवाह है, किन्तु जब प्रेम किसी अनन्त उद्धेश्य की ओर जुड़ जाता है, तभी उसमें गहराई और गम्भीरता आती है। पद्मावती की भावनाओं का परिष्कार हो जाता है उसमें विकास उत्पन्न होता है जहाँ वासना के स्थान प शूली की आज्ञा की सूचना पाकर व्याकुल हो उठती है अपने प्रियतम के साथ वह अपने भी प्राण त्यागने के लिए उद्यत हो जाती है।

जौं रे जिअंहि मिलि केलि करहिं मरहिं तौं एकहिं दोउ।
तुम्ह पैं जियँ होउ कछु मोहि जियँ होउ सो होउ।।

तोते द्वारा प्रणय सन्देश भेजती हुई वह कहती है कि जो शूली तुम्हें दी जा रही है, वह तुम्हें नहीं अपितु मुझे दी जा रही है। तुम्हारी शूली मेरे नयनों में चुभी रहेगी। यदि तुम जीवित रहे तो साथ–साथ रहेंगे। यदि मर गए तो मैं भी तुम्हारा साथ दूँगी। ईश्वर न करे कि तुम्हें कुछ हो।
जो कुछ हो मेरे प्राणों को हो। यहाँ उसके प्रेम का सच्चा एंव गम्भीर स्वरूप निखरा है। ऐसी सच्ची प्रेमिका तथा बुद्धिमति पतिवियुक्ता में सती होने का वह दृश्य तो पुनीत है जिसमें पद्मावती के प्रेम, विवेक, शुद्धाचरण एवं धर्मरायणता का पूर्ण एवं अक्षय प्रमाण हैं–

नागमती पदुमावति रानीं। दुवौ महासत सती बखानीं।।
दुवौ आइ चढ़ि खाट बईठीं। औ सिवलोक परा तिन्ह डीठीं।।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पद्मावती की प्रेमानुभूतियों में आरम्भ में वासना का आवेग दिखाई देता है। आगे चलकर जब वह रत्नसेन को आत्म त्याग और बलिदान करते हुए देखती है तो उसकी अनुभूतियाँ भी गम्भीर रूप धारण कर लेती हैं अतः अन्त में वह एक सच्ची, आदर्शनिष्ठा, सुदृढ़ प्रेमिका के रूप में चित्रित हुई हैं।[1]

**संदर्भ सूची**


1. मनोविज्ञानः डॉ. यदुनाथ सिन्हा
2. फ्रॉयड मनोविश्लेषणः अनुवादक–देवेन्द्रकुमार फ्रॉयडवाद
3. मनोविश्लेषण और मानसिक क्रियाऐं : डॉ. पद्या अग्रवाल
4. मनोविज्ञानः मानवीय समायोजन के मूल सिद्धान्त नारमन
5. एल. मन. अनुवादक: आत्माराम शाह
6. यौन मनोविज्ञानः हैवलाक एलिस
7. आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञानः डा देवराज उपाध्याय
8. आधुनिक हिन्दी कविता में मनोविज्ञान डा. उर्वशी जे सूरती
9. आधुनिक नाटकों का मनोवैज्ञानिक अध्ययनः डा गणेशदत्त गौड़
10. रामचरितमानस का मनोवैज्ञानिक अध्ययनः डा जगदीशप्रसाद शर्मा